2

खेल-खेल में पूर्व-प्राथमिक शैक्षिक क्रियाओं का संचालन

पद्‌मा यादव*

इस तथ्य को सभी स्वीकार करते हैं कि मनुष्य के जीवन के शुरुआती वर्ष बड़े ही महत्वपूर्ण होते हैं। इस अवधि में भावी विकास और ज्ञान की नींव रखी जाती है। इन वर्षों में बच्चों पर हर बात का गहरा असर होता है। बच्चों को इस अवधि में सर्वाधिक देख-रेख, सावधानी और मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। अतः प्रारंभिक बाल-देखभाल एवं शिक्षा केंद्रों में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए समुचित वातावरण प्रदान करने की आवश्यकता होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने बुनियादी स्तर की शिक्षा पर विशेष बल दिया है। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने एक नया ढाँचा दिया है '5+3+3+4' जिसमें पहले पाँच वर्ष में तीन से चार, चार से पाँच और पाँच से छह साल के बच्चों के लिए बुनियादी शिक्षा जिसे बालवाटिका या पूर्व-प्राथमिक शिक्षा कहा जाता है, को अहम बताया है। साथ ही बालवाटिका को कक्षा एक और दो (6–8 वर्ष) के साथ जोड़कर एक इकाई के रूप में देखा गया है। एक अध्यापक के लिए इस आयु अवधि के बच्चों के मनोविज्ञान और बाल विकास की प्रक्रिया को समझना आवश्यक है। इस लेख में बालवाटिका के बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बाल विकास के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई है। उनके शारीरिक विकास, भाषायी कौशलों के विकास, संज्ञानात्मक विकास, भौतिक पर्यावरण-संबंधी पहलुओं को विकसित करने हेतु कैसी क्रियाएँ करवाई जाएँ, सुझाई गई हैं। साथ ही कठपुतली कैसे बनाएँ व उनका प्रयोग कक्षा में किस प्रकार करें, इन बिंदुओं पर भी चर्चा की गई है। हाल ही में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सुझावों पर बुनियादी स्तर की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2022 का निर्माण किया गया है। लेख में शामिल गतिविधियाँ और सुझाव इस पाठ्यचर्या को कक्षा में क्रियांवित करने हेतु तथा उन्हें ज़मीनी स्तर पर लागू करने की ओर भी अग्रसर करते हैं।

© NCERT not to be republished

*प्रोफेसर, पूर्व-प्राथमिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110 016

प्रारंभिक बाल देखभाल एवं शिक्षा केंद्रों की सफलता काफ़ी हद तक शिक्षकों पर भी निर्भर होती है, क्योंकि वे ही इन शिक्षण संस्थाओं के मेरूदंड हैं। प्रारंभिक बाल देखभाल एवं शिक्षा केंद्रों में शिक्षिकाओं के विविध कार्य और विभिन्न उत्तरदायित्व हैं, जिनमें प्रमुख हैं प्रारंभिक बाल देखभाल एवं शिक्षा के दर्शन और आदर्शों के प्रति निष्ठा तथा बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होना। इन केंद्रों में शिक्षिकाओं को माँ, भोजन विशेषज्ञ, खेल-कूद का साथी आदि सभी भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं। बच्चों के प्रति प्रेम और उनके विकास में शिक्षिका की रुचि का होना, सर्वोपरि गुण है। शिक्षिका को नए-नए विचारों का स्वागत करने वाली, नया ज्ञान अर्जित करते रहने वाली और सदा 'विकासशील' होना चाहिए। प्रारंभिक बाल देखभाल एवं शिक्षा केंद्रों में शिक्षिका का कार्य इतना विशिष्ट होता है कि शिक्षिकाओं के लिए औपचारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। सुनियोजित और सुसंगठित प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा हम शिक्षिकाओं को इस बात के लिए प्रशिक्षित कर सकते हैं कि वे बच्चों के शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास की ओर ध्यान दें।

बच्चों का शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास

शिशु का शारीरिक विकास बहुत-सी बातों पर निर्भर करता है, जैसे— वंशानुगत जैविक तत्व, पोषण की स्थिति, शारीरिक स्थिति एवं स्वास्थ्य, व्यायाम के अवसर, इत्यादि। माँसपेशियों के विकास के लिए प्रारंभिक शैशवकाल आदर्श समय है, क्योंकि इस समय बच्चों की हड्डियों व माँसपेशियों का विकास तीव्रता से होता है और उनके शरीर में बड़ों की अपेक्षा अधिक लचीलापन रहता है। इसलिए, अत्यधिक सक्रिय रहने अथवा एक ही स्थान पर अधिक देर तक निष्क्रिय बैठे रहने से बच्चे थक जाते हैं। अतः शिक्षिकाओं को चाहिए कि वे ऐसी क्रियाओं का चुनाव करें जिनमें विविधता हो, साथ ही बच्चों की आयु, रुचियों एवं आवश्यकताओं पर आधारित हों। स्थूल एवं सूक्ष्म माँसपेशियों के प्रयोग में संतुलन होना चाहिए।

स्थूल माँसपेशियों के संतुलन से तात्पर्य स्थूल माँसपेशियों की क्रियाओं पर नियंत्रण होने से है, जैसे— जाँघ, हाथ-पाँव, धड़ और घुटनों आदि की क्रिया।

सूक्ष्म माँसपेशियों के संतुलन का अर्थ सूक्ष्म माँसपेशियों की क्रियाओं पर नियंत्रण होने से है, विशेष रूप से उँगलियों तथा कलाई की माँसपेशियों, आँख और हाथ की माँसपेशियों का संतुलन। इससे बच्चे ऐसी क्रियाएँ के लिए तैयार होते हैं जिनके लिए अधिक, कुशल तथा नपे-तुले कलात्मक और व्यावसायिक कार्य की आवश्यकता होती है, जैसे— लिखना, सृजनात्मक क्रियाएँ तथा अन्य सभी।

बच्चों का शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास भली-भाँति हो सके इसलिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- बच्चों को कक्षा में जो भी क्रियाएँ करवाएँ, उनकी पहले से योजना बना लें एवं योजना से संबंधित सामग्री भी तैयार कर लें।

© NCERT not to be republished

- कक्षा में सदैव सामान को व्यवस्थित रखना चाहिए, ताकि बच्चों को घूमने-फिरने में कोई परेशानी न हो।
- उछलने-कूदने तथा बैठकर की जाने वाली क्रियाओं तथा कक्षा के बाहर और अंदर की जाने वाली क्रियाओं में संतुलन बनाए रखना चाहिए।
- इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि जो भी सामग्री कक्षा में प्रयोग में लाई जा रही है वह सही अवस्था में हो, ताकि बच्चों को चोट न लगे।
- सभी बच्चों को एक समान न समझें, क्योंकि सभी बच्चे एक समान नहीं होते। अतः उनकी तुलना नहीं करनी चाहिए।
- बच्चे जब कक्षा में या बाहर स्वतंत्र रूप से खेल-खेल रहे हों तो शिक्षिका को सदैव सतर्क रहना चाहिए।
- यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि बच्चों को खेल सामग्री तथा अन्य सामग्री के उपयोग का अवसर मिले।
- तेज गति से की जाने वाली क्रियाओं के बाद बच्चों को आराम करने का अवसर देना चाहिए।

समूह को बहुत-सी गतिविधियाँ करवाई जा सकती हैं जो कि निम्नलिखित हैं—

स्थूल माँसपेशियों के विकास के लिए क्रियाएँ

- **चलना**— व्यायाम करना, स्वतंत्र रूप से मैदान में चलना, जानवरों की चाल में चलना व आगे-पीछे की ओर चलना।
- **दौड़ना**— एक स्थान से दूसरे स्थान पर दौड़ना, टायर को लुढ़काते हुए दौड़ना व एक टायर से दूसरे टायर में कूदना।
- **कूदना व उछलना**— खरगोश व मेंढक की चाल में कूदना, आगे व पीछे की दिशा में उछलना इत्यादि।
- **शारीरिक संतुलन**— सीधी बिछी रस्सी पर चलना, टेढ़ी बिछी रस्सी पर चलना, चम्मच में नींबू लेकर चलना, सिर पर किताब रखकर चलना एवं गेंद पकड़ कर चलना, आदि।
- **झूलना**— पेड़ पर टायर का झूला डालकर बच्चों को झुलाना, मैदान में लगे झूलों पर बच्चों को झुलाना।
- **चढ़ना व उतरना**— मैदान में बनी सीढ़ियों पर चढ़ना व उतरना, झूलों पर बच्चों को चढ़ने व उतरने देना।
- **गेंद से संबंधित खेल**— गेंद को फेंकना पकड़ना, गेंद को पैर से मारना, गेंद को सिर के ऊपर व पैरों के नीचे से निकालना, लक्ष्य पर गेंद फेंकना इत्यादि।

इसी तरह और भी कई खेल बच्चों द्वारा खेले जा सकते हैं, जैसे— पकड़म-पकड़ाई, म्यूजिकल चेयर, एक-दूसरे की कमर पकड़कर मगरमच्छ बनना और उसके द्वारा स्वयं की पूँछ पकड़ने की कोशिश करने वाला खेल इत्यादि।

सूक्ष्म माँसपेशियों के विकास के लिए क्रियाएँ

- **पिरोना**— मोतियों को तार में पिरोना एवं उससे रंग-बिरंगी माला बनाना, छोटे-बड़े आकार के मोती तार में पिरोना, रंगों के क्रम में मोती पिरोना इत्यादि।
- **बीजों से क्रियाएँ**— दिए गए आकार के किनारे पर बीज रखना, बीजों को कागज़ पर रखकर उससे

© NCERT not to be republished

से गोल, चौकोर एवं त्रिभुज आकार बनाना, चेहरे का आकार बनाना, प्रोजेक्ट से संबंधित विभिन्न आकृतियों, जैसे— झोंपड़ी, झंडा आदि बनाना।

- **छाँटना**— विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को छाँटना, जैसे— पत्थर, पत्तियाँ, मोती आदि।
- **रेत पर आकार बनाना**— रेत पर अँगुली से कोई भी आकृति बनाना, बर्तनों में रेत भर कर उड़ेलना, गीली रेत पर पत्तियाँ, सींक तथा झंडा गाड़ना इत्यादि।
- **उड़ेलना**— एक गिलास से दूसरे गिलास में पानी व रेत उड़ेलना।
- **फ्रेम पर कार्य करना**— फ्रेम पर टिच बटन, काज बटन, हुक, चेन, गाँठ बाँधने आदि का प्रयास करना।
- **मिट्टी का काम**— मिट्टी से विभिन्न प्रकार के बर्तन व मिठाइयाँ, जैसे— लड्डू, बर्फी, चकला, तवा आदि बनाना, अखबार को मरोड़कर, बॉल बनाकर उस पर रंग करना।
- **कागज़ फाड़ना और चिपकाना**— कागज़ को लंबा-लंबा व छोटा-छोटा फाड़कर चिपकाना। कागज़ मोड़ना और उससे टोपी, जोकर, नाव, झोंपड़ी का आकार बनाना।
- **रंग घिसना**— पेपर पर रंग घिसना, आकृति में रंग भरना, चित्र बनाना, पेंटिंग करना, हथेली, मुट्ठी, पैर के तलवे, अँगूठे पर रंग लगाकर कागज़ पर छपाई करना, सब्ज़ियाँ, जैसे— आलू, भिंडी, प्याज़, गोभी, कमल ककड़ी आदि से छपाई करना, कपड़े, ऊन, चायपत्ती, रेत, लकड़ी के बुरादे से आकृति बनाना, फूल एवं पत्तियों को कागज़ पर घिसकर उनसे चित्र बनाना इत्यादि।

बच्चों में भाषा-विकास

बच्चे अपने आस-पास के लोगों की नकल करके, प्रोत्साहन पाकर विचारों और भावनाओं को सुनकर व व्यक्त करके भाषा सीखते हैं। कुछ बच्चे जल्दी बोलना आरंभ करते हैं और कुछ देर से, कुछ बच्चे बातूनी होते हैं तो कुछ चुप रहने वाले, ये विभिन्नताएँ बच्चों को मिलने वाले परिवेश के कारण होती हैं।

बच्चों के भाषा विकास में माता-पिता, खिलौनों, तस्वीरों व चित्र वाली पुस्तकों, अच्छे स्तर के वार्तालाप, कहानियाँ, गीत आदि का महत्वपूर्ण योगदान होता है। बच्चों को अपने विचार व्यक्त करने एवं सभी से बातचीत करने के अवसर देने चाहिए। उन्हें विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ, जैसे— कठपुतली, दूरदर्शन देखने, रेडियो सुनने के अवसर मिलने चाहिए। उन्हें घूमने-फिरने व भ्रमण करने के अवसर देने चाहिए। जब बच्चा प्रारंभिक बाल शिक्षा केंद्र पर आता है तब वह बोलना जानता है और बोलने-संबंधी अपनी कुशलता को अधिक विस्तार देने का प्रयास करता है। इसलिए प्रारंभिक बाल शिक्षा केंद्र पर बच्चों की भाषिक निपुणता को और भी प्रोत्साहित करने की ज़रूरत है। भाषा विकास का तात्पर्य बच्चे को सुनने व बोलने की क्षमता का विकास करना व उसे पढ़ने व लिखने के लिए तैयार करना है। अतः बच्चों की भाषिक कुशलता के लिए बच्चों में सुनने, बोलने, पढ़ने व लिखने का कौशल विकसित करने हेतु शिक्षिका को प्रयास करना चाहिए।

शिक्षिकाओं को ध्यान रखना चाहिए कि—

- कक्षा में किसी भी क्रिया को कराते समय बच्चों को अपने अनुभव व्यक्त करने का मौका दें एवं उन्हें प्रोत्साहित करें।
- बच्चों को सदैव नए-नए अनुभव प्राप्त हों इसका प्रयत्न करें। इसके लिए कक्षा में रखी वस्तुओं में फेर-बदल करते रहें, ताकि बच्चों को घूमने-फिरने के अवसर मिलें। इससे बच्चों के शब्द भंडार व अनुभवों में भी वृद्धि होगी।
- किसी भी क्रिया को कराते समय बच्चों से बातें करते रहें।
- बच्चों को छोटे-छोटे निर्देश दें एवं पूरे वाक्य में बोलने के लिए प्रोत्साहित करें।
- जो बच्चे अपने आप को व्यक्त नहीं कर पाते, उन्हें प्रोत्साहित करें। उनकी प्रशंसा करके, प्यार से उन्हें खुलने का अवसर दें।
- जो भी बच्चे कह रहे हैं, उसे धैर्य के साथ सुनें और उनके प्रश्नों के उत्तर देने की कोशिश करें।
- बच्चों को छोटे-छोटे समूहों में काम करने का अवसर दें, ताकि वे एक-दूसरे से बात कर पाएँ व अपने आप को व्यक्त कर पाएँ।
- बच्चों को चित्रों वाली पुस्तकों को देखने, उलटने-पुलटने के अवसर दें।
- हमेशा कक्षा में अच्छी भाषा का प्रयोग करें, क्योंकि बच्चे शिक्षिका की नकल करते हैं।
- यदि कोई बच्चा गलत बोलता है तो उसे बीच में रोक कर सुधारें नहीं, क्योंकि ऐसा करने से बच्चे निराश हो जाते हैं और भविष्य में अपनी बात करने में झिझकते हैं।

सुनने की क्षमता

सुनने की क्षमता बढ़ाने के लिए बातचीत, कहानियाँ, कविताएँ इत्यादि बहुत महत्वपूर्ण हैं। बच्चों में सुनने की क्षमता को विकसित करने हेतु कई तरह के खेल एवं क्रियाएँ करवा सकते हैं, जैसे—

- घुँघरू, ताली, डफली, घंटी, सीटी, चुटकी आदि की आवाज़ की पहचान करना।
- जानवरों की आवाज़ों को सुनाकर उनकी पहचान करना।
- आँख बंद करके वातावरण में होने वाली आवाज़ों को महसूस करना।
- कपड़े के आँड़ में बच्चों को खड़ा करके, उसकी आवाज़ की पहचान करना।
- पानी उडेलने की, सिक्के के गिरने की, साइकिल की घंटी इत्यादि की आवाज़ सुनाकर उसकी पहचान करना।
- किसी दिशा में आवाज़ करके बच्चों से पूछना कि किस दिशा से आवाज़ आ रही है।
- पहेलियाँ पूछना व कहानियाँ सुनाना इत्यादि।

बोलने की क्षमता

घर और विद्यालय में बच्चों को बहुत कुछ सुनने के अवसर प्राप्त होते हैं, पर उन्हें अपनी भावनाओं व विचारों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने का अवसर नहीं मिलता, इसलिए बोलने की कुशलता का विकास अपेक्षित रूप में नहीं होता जितना कि होना चाहिए। मुक्त बातचीत, कहानी गढ़ना और सुनाना, नाटकीकरण, भाषा या शब्दों के खेल, मुक्त खेल और नाटकीय खेल आदि सभी क्रियाकलाप बच्चों में वाचिक कौशल के विकास में सहायक होते हैं।

© NCERT not to be republished

अतः भाषा-संबंधी कई खेल क्रियाएँ आयोजित की जा सकती हैं, जैसे—

- मुक्त वार्तालाप
- चित्र पठन
- बालगीत
- कहानियाँ बनाना
- किसी वस्तु का चित्र देखकर उसके बारे में बोलना, जैसे— पैन, पेंसिल, टिफिन आदि।
- कठपुतलियों का खेल
- नाटकीकरण आदि।

पढ़ने की तैयारी

प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम में पढ़ने की तैयारी पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। बच्चों को ऐसे अनेकानेक अनुभव दिए जाने चाहिए जिनसे कि वे आगे चलकर भली-भाँति पढ़ पाएँ। इसके लिए निम्नलिखित गतिविधियाँ महत्वपूर्ण हैं—

- किसी शब्द की प्रथम ध्वनि को पहचान कर उसी ध्वनि से आरंभ होने वाले अन्य शब्द बनाना।
- दिए गए शब्द से तुक मिलाकर नए शब्द बनाना, भले ही वे निरर्थक शब्द हों।
- एक जैसी दिखने वाली तस्वीरों/नमूनों को अलग तरह की दिखने वाली तस्वीरों/नमूनों और वस्तुओं से अलग करना।
- दो एक जैसी तस्वीरें जिनमें केवल एक भिन्नता हो, उस भिन्नता को पहचानना।
- शब्दों के समूह में अलग शब्द पहचानना।
- अपना लिखा हुआ नाम पहचानना।
- सुने गए और बोले गए में संबंध स्थापित करना। बायें से दायें दिशा में क्रियाओं का आयोजन करना इत्यादि।

अतः बच्चों की पढ़ने की तैयारी से संबंधित निम्नलिखित क्रियाएँ शिक्षिक द्वारा करवाई जानी चाहिए।

- नाम की प्रथम ध्वनि की पहचान करना, जैसे— ममता 'म'।
- नाम की प्रथम ध्वनि से दो अन्य वस्तुओं के नाम बताना, जैसे— तुकात्मक शब्द बनाना, जैसे— आलू-चालू भालू-कालू, 'म'— मटका, मछली।

सभी बच्चे मिलकर बाल गीत गा सकते हैं, जैसे—

"हमने तीन चीज़ें देखीं, बाबा तीन चीज़ें देखीं
जंगल में देखी लकड़ी, लड़की पर बैठी है मकड़ी
मकड़ी खा रही थी ककड़ी
हमने...
गली में आया भालू, उसका नाम था मोटा कालू
वो तो खा रहा था आलू
हमने देखी सारी दिल्ली, खंभा नोंच रही थी बिल्ली
बच्चे उड़ा रहे थे खिल्ली
हमने...
हमने देखा मोटा बंदर, उसका नाम था मस्त कलंदर
वो तो घुस गया घर के अंदर
हमने..."

- किसी शब्द की प्रथम एवं अंतिम ध्वनि की पहचान करना।

not to be republished © NCERT

- एक ध्वनि से कई शब्द बनाना। उदाहरण के लिए, 'म' ध्वनि से मछली, मकड़ी, मगरमच्छ, मेढक आदि।
- प्रथम ध्वनि के आधार पर जो भिन्न हो उसे बताएँ।

नल	मछली	मटका

- अंतिम ध्वनि से शब्द बनाना, जैसे— 'फल', अंतिम ध्वनि है 'ल', 'ल' से लौकी, लाल आदि।
- इंगित करना कि किस-किस की प्रथम ध्वनि एक जैसी है।

मछली	मटका	नदी	पतंग

- रंगों का मिलान करना।
- बाईं से दाईं दिशा की तरफ क्रियाएँ करने हेतु प्रोत्साहन देना।
- पहली ध्वनि के आधार पर या पहले से मेल खाते शब्द को सही जगह पर रखना इत्यादि।

न	प	क
नल	पतंग	कमल
नदी	पत्ता	कप

लिखने की तैयारी

लिखने की तैयारी के लिए सूक्ष्म माँसपेशियों का विकास आवश्यक है। हाथ और आँख में समन्वय होना चाहिए। लिखने की तैयारी हेतु सभी सृजनात्मक क्रियाएँ (कागज़, फाड़ना, काटना और उसे चिपकाना, पिरोना, चित्रकला, रंगना, कागज़ मोड़ना, मिट्टी का काम, छाँटना, नमूना तैयार करना इत्यादि) सहायक सिद्ध होती हैं। बड़े आकार के चौकोर, तिकोन, गोला, अक्षर आदि बना कर दिए जा सकते हैं और बच्चों से उसी के ऊपर बार-बार रंग फेरने को कहना चाहिए। सीधी, आड़ी तिरछी रेखाएँ और आकारों की नकल कर उन्हें बनाने से भी बच्चों की सूक्ष्म माँसपेशियाँ विकसित होती हैं। ये क्रियाएँ सभी बच्चों को बारी-बारी व्यक्तिगत रूप से करवाई जानी चाहिए।

लिखने की तैयारी हेतु विभिन्न क्रियाएँ कारवाई जा सकती हैं, जैसे— बिंदुओं का मिलान करना, घिरे हुए क्षेत्र में रंग भरना, कोई नमूना बनाना इत्यादि। प्रारंभिक अवस्था में खड़िया या रंग भरने वाले क्रेयोन का प्रयोग ज़्यादा उचित रहता है। बाद में समन्वय और नियंत्रण के लिए आवश्यकता के अनुसार पेंसिल दी जा सकती है। शिक्षिका द्वारा भाषा विकास से संबंधित अनेक कविताएँ एवं खेल-खेले जा सकते हैं।

संज्ञानात्मक विकास

संज्ञान का अर्थ है अपने आस-पास के वातावरण को जानना और समझना। अतः संज्ञानात्मक विकास से अभिप्राय उन मूलभूत कौशलों के विकास से है जो हमें अपने पर्यावरण को जानने में सहायता करते हैं। बच्चों के सोचने के ढंग और बड़ों के सोचने के ढंग में अंतर होता है। बच्चे, जैसे-जैसे बढ़ते हैं उनकी सोचने की प्रक्रिया पर पर्यावरण का प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। तीन से छः आयु के बच्चे संज्ञानात्मक विकास के उस स्तर पर होते हैं जब उनका अनुभव, जो प्रत्यक्ष होता है उससे अधिक प्रभावित होता है। बच्चों का चिंतन आत्म-केंद्रित होता है अर्थात वे हर वस्तु को अपने दृष्टिकोण से देखते हैं। वे अपने को दूसरे की स्थिति में रखकर नहीं सोच पाते। वे अपने पर्यावरण के प्रत्यक्ष तथा ठोस अनुभवों से सीखते हैं। अतः खेल और क्रिया उनके सीखने के लिए आवश्यक है। बच्चों को जितने अधिक अनुभव होंगे उसी के अनुसार

© NCERT not to be republished

उनकी समझने की शक्ति विकसित होगी इसलिए उनके सीखने की गति बढ़ाने के लिए उन्हें विविध अवसर एवं अनुभव देने चाहिए। अनुभव ही प्रत्यय है। यह प्रत्यय अलग-अलग वस्तुओं एवं अनुभवों से बनते हैं, जो कि तीन चरणों में पूर्ण होता है—

1. प्रत्यक्षण (Perception)
2. विभेदीकरण (Differentiation)
3. सामान्यीकरण (Generalisation)

बच्चे कुछ प्रत्ययों का निर्माण वस्तु को प्रत्यक्ष देखकर व उसके विषय में सुनकर बनाते हैं। यदि किसी विषय पर बच्चों को सही दिशा-निर्देश न दिए जाएँ एवं सही अनुभव न प्रदान किए जाएँ तो अवधारणाएँ गलत भी बन जाती हैं। अतःशिक्षिका को बच्चों को पूर्ण व प्रत्यक्ष अनुभव एवं उदाहरण प्रदान करने चाहिए। पूर्व-प्राथमिक स्तर पर निम्न प्रत्यय अहम हैं।

1.	प्राकृतिक पर्यावरण संबंधित प्रत्यय	जानवर, पक्षी, कीड़े-मकौड़े, सब्ज़ियाँ, फल, पेड़-पौधे
2.	भौतिक पर्यावरण से सबंधित प्रत्यय	पानी, हवा, आसमान, पृथ्वी, मौसम
3.	सामाजिक पर्यावरण से संबंधित	स्वयं एवं परिवार, यातायात, हमारे मददगार, त्यौहार

जानने और समझने के लिए पाँचों इंद्रियों का प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण है। बच्चे इन्हीं के माध्यम से सीखते हैं। अतः पाँचों इंद्रियों (देखने, सुनने, स्पर्श, सूँघने एवं स्वाद) के विकास के अवसर आवश्यक हैं। अपने पर्यावरण को समझने के लिए बच्चों में प्रमुख संबोधों का निर्माण होना आवश्यक है। स्पष्ट संबोधों का विकास होने पर ही वे अपने पर्यावरण में उपलब्ध विभिन्न वस्तुओं का निरिक्षण और विभेदीकरण कर सकेंगे और उन्हें श्रेणीबद्ध कर सकेंगे। ऐसा होने पर वे 'निरीक्षण आधारित निष्कर्षों' से 'तर्क पर आधारित' सही निष्कर्षों पर पहुँच सकेंगे।

किसी भी संबोध के विकास के लिए क्रियाओं का नियोजन निम्नलिखित क्रम में किया जाना चाहिए—

1. मिलान करना
2. पहचानना
3. नाम बताना
4. क्रमीकरण
5. वर्गीकरण

बच्चों के साथ रंग, आकार, गणित से पूर्व के संबोध, जैसे—बड़ा-छोटा, भारी-हल्का, मोटा-पतला, दूर-पास, अधिक-कम, पहले-बाद में, गर्म-ठंडा आदि पर चर्चा आवश्यक है। जानने और समझने के लिए पाँचों इंद्रियों का प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण है। बच्चे इन्हीं के माध्यम से सीखते हैं। यदि इन्द्रियों का विकास सही नहीं होगा तो बच्चों में गलत एवं अपूर्ण संबोध विकसित होंगे। पाँच इंद्रियाँ होती हैं—

1. सुनने की इंद्रियाँ
2. देखने की इंद्रियाँ
3. स्पर्श अनुभव करने की इंद्रियाँ
4. स्वाद इंद्रियाँ
5. सूँघने की इंद्रियाँ

प्रत्येक इंद्रिय को विकसित करने के लिए कई कविताएँ, खेल, क्रियाएँ आयोजित कर सकते हैं। संख्या-संबोध-संबंधी विकसित करने की लिए क्रियाएँ कारवाई जा सकती हैं। जैसे—

© NCERT not to be republished

1. एक वस्तु से एक वस्तु के साथ का संबंध स्थापित करना (one-to-one correspondence)
2. Self-correcting puzzles (मिलान करना) वस्तु की संख्या और अंक का मिलान करना
3. कार्ड की सहायता से मिलान करने के खेल खेलना

बच्चों के भाषायिक विकास और संज्ञानात्मक विकास में कठपुतली का प्रयोग

बच्चों के भाषायिक विकास और संज्ञानात्मक विकास में कठपुतली का प्रयोग बहुत सहायककारी होता है। भारतीय संस्कृति का प्रतिबिंब लोक कलाओं में झलकता है। इन्हीं लोककलाओं में कठपुतली कला भी शामिल है। यह देश की सांस्कृतिक धरोहर होने के साथ प्रसार का सशक्त माध्यम भी है। कठपुतलियों का इस्तेमाल संप्रेषण के लिए काफ़ी पहले से हो रहा है। हमारे देश में तो यह कला लगभग दो हज़ार वर्ष पुरानी है। पहले नाटकों को प्रस्तुत करने का एक मात्र माध्यम कठपुतलियाँ ही थीं। आज तो आधुनिक तकनीक वाले कई माध्यम, जैसे— रेडियो, टी.वी., आधुनिक तकनीकी सुविधाओं वाली रंगशालाएँ, मंच सभी कुछ हैं।

भाषा सिखाने में कठपुतलियों का प्रभावशाली ढंग से उपयोग किया जा सकता है। कठपुतलियाँ नाच सकती हैं, बात कर सकती हैं, गा सकती हैं, कूद सकती हैं, पढ़ सकती हैं, लिख सकती हैं और पढ़ा भी सकती हैं। कठपुतलियों के साथ कक्षा जीवंत हो जाती है।

परिणामस्वरूप बच्चे-दूसरों के साथ संवाद कर सकते हैं। उनमें सुनने का कौशल विकासित होता है। बच्चे सामाजिक उपकरण की तरह भाषा का इस्तेमाल कर पाते हैं। उनकी अभिव्यक्ति प्रवाहमय और स्वाभाविक होती है और साफ़-साफ़ अपनी बात कह पाते हैं। यदि कठपुतलियों के साथ कोई लेबल और संकेत चिह्न इस्तेमाल किए जाएँ, तो बच्चे लिखित भाषा भी सीख सकते हैं। जिस ढंग से बच्चे कठपुतलियों के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं, वह दिलचस्प होती है वे हकीकत में कठपुतलियों के साथ ऐसे व्यवहार करने लगते हैं, जैसे कि कठपुतलियाँ प्राणवान हों। कठपुतलियाँ संवाद को बढ़ावा देती हैं, क्योंकि बच्चे इन कठपुतलियों के नाम, उनकी पसंद और नापसंद को जानने का प्रयत्न करते हैं। वे बच्चे जिनका रवैया हमेशा सहयोगात्मक नहीं होता, या जो कक्षा में बहुत ज़्यादा दिलचस्पी नहीं दिखाते, वे भी कठपुतलियों की ओर बहुत सकारात्मक ढंग से प्रतिक्रिया करते हैं। कठपुतलियों का संचालन करने के लिए अलग-अलग किरदारों के लिए अलग -अलग आवाज़ों का इस्तेमाल करना आवश्यक है। कठपुतली-संचालकों के लिए यह सीखना ज़रूरी है कि कठपुतलियों को कैसे चलाया जाता है। कठपुतलियाँ जो कह रही हैं ठीक उसी मुताबिक उनके मुँह खुलना चाहिए, कभी-कभी कठपुतलियों को स्थिर रहना होता है, या उपयुक्त ढंग से मोड़ना या चलना होता है, और साथ ही ध्यान से मंच पर प्रवेश करना व बाहर भी निकलना होता है। हालाँकि, बच्चों का कठपुतलियों पर बस इतना नियंत्रण होना चाहिए कि उनका नाटक रोचक रहे और दर्शकों के रूप में बैठे उन्हीं के साथियों को पूरा नाटक समझ में आ सके।

कठपुतली में गति व भाषा होती है, जिसके माध्यम से किसी भी संदेश को किसी भी समूह या व्यक्ति विशेष के पास बहुत ही आसानी से पहुँचाया जा सकता है। कठपुतलियाँ कई प्रकार की होती हैं, जैसे—

- धागे/रस्सी से बनी कठपुतलियाँ
- लकड़ी से बनी कठपुतलियाँ (इनका प्रयोग उड़ीसा व हैदराबाद में अधिक किया जाता है।)
- परछाई से बनी कठपुतलियाँ
- उँगलियों पर बनाई जाने वाली कठपुतलियाँ
- दस्ताने से बनी कठपुतलियाँ
- हाथ द्वारा नचाई जाने वाली कठपुतलियाँ

शिक्षक द्वारा पेपर मोड़कर जानवरों और पक्षियों के आकार बनाए जा सकते हैं, जैसे— लोमड़ी, कौआ, मेंढक, तितली, मगरमच्छ आदि। कुछ स्टिक पपेट्स, कागज़ के घोड़े, बिल्ली, चिड़िया आदि के मुखौटे भी बनाए जा सकते हैं।

निष्कर्ष

बच्चों के सर्वांगीण विकास में शिक्षक की अहम भूमिका होती है। पूर्व-प्राथमिक स्तर पर पाठ्यचर्या का मतलब केंद्र में होने वाली विभिन्न प्रकार की खेल क्रियाओं से है। इस स्तर पर परंपरागत विषयों के स्थान पर व्यावहारिक क्रियाएँ विशेष महत्व रखती हैं। अतः बच्चों के शारीरिक, संज्ञानात्मक विकास, भाषा विकास, सामाजिक और सृजनात्मक विकास की क्रियाओं को कराने के लिए खेल सामग्री की भी आवश्यकता होती है। शिक्षकों को इसके लिए अभिभावकों और बच्चों की मदद के साथ-साथ स्थानीय कारीगरों और साथी शिक्षकों की भी मदद लेनी चाहिए और खेल गतिविधियों के माध्यम से ही सिखाना चाहिए। वे जो भी स्त्रोत सामग्री बनाएँ उनका प्रयोग कक्षा में निरंतर करना चाहिए, क्योंकि छोटे बच्चे देखकर और महसूस करके सीखते हैं। उन्हें मौखिक गतिविधियाँ उतनी आकर्षित नहीं करती हैं जितना करके सीखने वाली गतिविधियाँ आकर्षित करती हैं।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

कौल, विनीता. 1996. *प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

महिला और बाल विकास मंत्रालय. 2013. *नेशनल अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन पॉलिसी*. भारत सरकार, नई दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 2019. *निष्ठा : विद्यालय प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

———. 2022. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर फाउंडेशनल स्टेज*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/NCF_for_Foundational_Stage_20_October_2022.pdf